*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

तापसी

हिंदी उत्तर पुस्तिका

4

YBPL

तापसी-4

अध्याय-1: समय बहुत ही मूल्यवान है

1. मौखिक : स्वयं करें।

2. लिखित: 1. कर मल-मलकर उसे पछताना पड़ता है, जो समय को खोता है। 2. समय के महत्व का इस प्रकार पता चलता है, कि समय चले जाने पर पछतावा रहता है। 3. महात्मा गाँधी को समय की बरबादी अच्छी नही लगती थी। 4. गाँधी जी कमर में लटकी घड़ी से उनके समय का पाबंद होने का पता चलता है। 5. प्रस्तुत कविता में कवि समय को सदुपयोग करने का सकल्प करने के लिए कहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न: (3) 1.(स), 2.(ब), 3.(अ), 4.(ब)। **(4)** 1.कर मल-मल पछताता 2. फिर मनुष्य है पाता, उपचारों से है बन जाता, पढ़ने से है आ जाती, नही समय की थाती। 3. हरदम घड़ी लटकती, थी अत्यधिक खटकती। (ख) मूल्य, धर्म गुण, क्रोध, चिंता (ग) नपुसकलिंग, नपुसकलिंग, नपुसकलिंग, नपुसकलिंग, नपुसकलिंग, (घ) लड़के, दिल्ली, भारत, कौआ, बंदर। (ङ) 1. भूतकाल, 2. भविष्यकाल, 3. वर्तमान काल, 4. वर्तमान काल, 5. वर्तमान काल।

भाषा की बात:(क) गुणवान: पुनीत एक गुणवान व्यक्ति है। मूल्यवान: श्रीकृष्ण के पास एक मूल्यवान कुर्सी है। बुद्धिमान: सोनू एक अति बुद्धिमान व्यक्ति है। कर मलकर पछताना: दुष्ट व्यक्ति जब अपनी गलती पर पिट गया, तो वह कर मलकर पछताता है। खटकना: आँखों से पूरी तरह खटकना। **सोचने समझने की बात : 1.** समय का सदुपयोग करने से यह अभिप्राय है। कि सभी कार्य समय पर करो। 2. हम समय पर सदुपयोग करने के लिए सभी कार्य सुचारू रूप में करते है। 3. स्वयं करें।

कुछ करने की बात: स्वयं करें।

अध्याय-2: जाग उठा इंसान

1. मौखिक : स्वयं करें।

2. लिखित: 1. सदानंद नाम का एक साधु गंगा के तट पर कुटी बनाकर रहता था। वह गंगा के सरम्य तट पर अपना समय भगवद भजन में बिताता। मानवीय गुणों से युक्त साधु सदैव दूसरों की सहायता को तत्पर रहता, प्राणीमात्र पर दया करता था। परंतु उसमें एक अवगुण भी था। वह लालची था उसने बहुत सी स्वर्ण मुद्राएँ अपने पास एकत्र की हुई थी। 2. एक बार सभी तीर्थों की यात्रा कर लेनी चाहिए। इसी बहाने परोपकार भी हो जाएगा। 3. प्राचीन भारत में प्रथा थी, कि सन्यासी तीर्थों में एकत्रित जन-समुदाय को अपने सद्वचनों से लाभन्वित करते थे। वे उन्हें उपदेश देते, कथा-प्रवचन करते, उनकी विविध कठिनाइयों-समस्याओं का समाधान निकालते, उन्हें सुलझाने का प्रयास करते। 4. उसे पहाड़ो की दुर्गम चट्टानें भी चढ़नी थी। रास्ते में

बहुत से यात्रियों से मिलने की आशा भी न थी। उसने सुन रखा था कि पहाड़ी कंदराओं और घने वनों में लुटेरे छिपे रहते थे। जो यात्रियों को लूट लेते हैं। उसे अपने धन की चिंता होने लगी। वह सोचने लगा कि लुटेरे धन के कारण कहीं उसके प्राण ही ने ले लें। 5. सदानद ने बालू में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदा और स्वर्ण मुद्राओं वाली थैली उसमें रखदी। गड्ढे को बालू से पाटकर काले-काले पत्थर चुनकर बालू और पत्थरों से ऊँचा सा शिवलिंग बनाया। पुष्पादि अपर्ति कर उसकी पूजा की और निश्चित हो गया कि लौटकर यहाँ से लौटकर स्वर्ण मुद्राओं वाली पोटली निकाल लेगा। अब वह खुशी-खुशी तीर्थयात्रा पर आगे बढ़ गया। 6. सदाशिव तीर्थ यात्रा से वापस लौटा तो असंख्य शिवलिंग बने हुए देखकर हताश हो वही बैठ जाता है और बहुत देर तक शिवलिंग के उस मेले को देखता रहता है। क्योंकि जहाँ उसने स्व्र्ण मुद्राओं वाली थैली दबाई थी उसकी पहचान करना असंभव था। 7. सदानंद शिवलिंग के उस मेले को देखता रहा। गंगा की पहली धारा में उसके मलिन विचार धूल गए थे। वह सोचने लगा-किसी ने ठीक ही कहा है, कि वह धन नष्ट हो जाता है, इस आत्मबोध से सदानंद का सरा दु:ख दूर हो गया। वह कमंडल और पोटली लेकर, लाठी के सहारे चलता हुआ आगे बढ़ गया। उसे तीर्थ-यात्रा का फल जो मिल गया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न: (3). 1.(स), 2.(अ), 3.(अ), 4.(ब) **(4)** 1.आयु 2. स्वर्णमुद्राएँ, 3. तीर्थों 4. लालची, 5. शिक्षा। **(5)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ । **(6)** आनंद, एवं, परलोक,सप्त, अस्त। **भाषा की बात:** (क) गंगा-मन्दाकिनी, मुक्तिवाहिनी, पृथ्वी-भू, भूमि, धरा। (ख) 1. भूतकाल, 2. भविष्यकाल, 3. वर्तमान काल, 4. भूतकाल, 5. भविष्यतकाल, 6.वर्तमान काल, 7. वर्तमान काल, (ग) नदी-नंपुसकलिंग, पोटली-नपुसकलिंग, जल-नपुसकलिंग, गड्डा-नपुसकलिंग, स्वर्ण-नपुसकलिंग, (घ) लुटेरा-लुटेरे, कठिनाई-कठिनाईयाँ, गुफा-गुफाएँ, समस्या-समस्याएँ, पहाड़ी-पहाड़िया, चट्टान-चट्टानें। (ङ) **जन-कल्याण:** ओम जन-कल्याण के कार्य करता है। **दंग रह जाना:** जब मैनें संयज की पिटाई की, तो वह दंग रह गया। **सिर चकरा जाना:** संजय की पिटाई से उसकी पत्नी का सिर चकरा गया। **सोचने समझने की बात:1.** जब तक सदानंद का चित्त स्वर्ण मुद्राओं में रहा उसे उनकी चिंता सताती रही। ऐसा सभी के साथ होता है, क्योंकि लोभ विनाश का कारण है। 2. स्वर्ण मुद्राओं से चित्त हटते ही सदानंद का चित्त शांत हो गया, क्योंकि वह संतोषी प्राणी बन गया था। **कुछ करने की बात:** (क) स्वयं करें। (ख) स्वयं करें।

अध्याय-3: पंच परमेश्वर

मौखिक: स्वयं करें। **2. लिखित: 1.** जुम्मन की खाला ने अपनी जायदाद जुम्मन के नाम उसकी मीठी-मीठी बातें, लंबे-चौड़े वायदें सुनकर कर दी। **2.** जायदाद की रजिस्ट्री होते ही जुम्मन व्यवहार बदल गया। इससे जुम्मन के स्वभाव की धूर्तता एवं

चालाकी की विशेषता प्रकट होती है। **3.** जुम्मन की खाला के प्रति जुम्मन की पत्नी का व्यवहार बुरा था। **4.** मैं अलग पका खा लूँगी खाला ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जुम्मन की पत्नी उसके खरी-खोटी सुनाती थी। **5.** अलगू चौधरी केसरपंच चुने जाने को यह प्रतीत हुआ कि वह तो उसका दोस्त है। और उसका पक्ष लेगा। **6.** फैसला सुनते ही जुम्मन के पैरों तले जमीन इसलिए खिसक गई थी। क्योंकि पंचायत ने फैसला खाला के हित में दिया था। 7. संरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में जिम्मेदारी भाव पैदा हुआ।

बहुविकल्पीय प्रश्नः (3) 1.(ब), 2.(स), 3.(ब), 4. (स)। **(4)** 1.खेती, 2. जुम्मन, 3. पंचायत, 4. जुम्मन, 5. जुम्मन। **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ । **(6)** 6, 4, 1, 5, 2, 3। **भाषा की बातः (क)** 1.(द), 2. (स), 3.(अ), 4. (ब)। **(ख)** 1.(स), 2.(ब), 3.(द), 4.(अ)। (ग) 1. मयूर कठिन परिश्रम कर रहा है। 2. कुछ लोग दूसरे के कार्यो में दखल देते है। 4. प्रतीक का अपने पिता पर अटूट विश्वास है। 5. गाड़ी मित्रता वाला और गाढ़ी सेविका में मित्रता है। (घ) 1. पेड़-जातिवाचक, 2. शत्रुता-जातिवाचक 3. मित्र-जातिवाचक 4. मित्रता-जातिवाचक, 5. शत्रु-जातिवाचक । (ड़) 1. स्वादिष्ट, 2. थोड़ी-सी, 3. गाढ़ी, 4. पुराने, 5. सर्वोच्च। **सोचने-समझने की बातः** 1. यदि शेख जुम्मन के स्थान पर आप होते तो खाला के साथ अच्छा एवं सम्मानित व्यवहार करते। **कुछ करने की बातः (क)** स्वयं करें। **(ख)** स्वयं करें।

अध्याय-4: चाँद का कुर्ता

1. मौखिक उत्तरः स्वयं करें। **2. लिखितः** चाँद ने हठ करके एक दिन माँ से कहा कि हे माँ! मुझे एक झिंगोला सिला दो। 2. माँ ने कहा कुशल करे भगवान, लगे न तुझको जादू टोने। 3. सन् सन् ठंडी हवा एवं जाडे में ठिठुरन में चाँद को अपनी यात्रा पूरी करनी होती है। 4. अरे सलोने तुझे किसी की नजर न लगे। 5. माँ एक नाप का कपड़ा चाँद के लिए इसलिए सिलवा पाती थी। क्योकि चाँ का आकार घटता रहता है। 6. चाँद की कठिनाई का अंत में वह हल निकला कि अब तूही बता तेरी नाक किस दिन की जा सके।

बहुविकल्पीय प्रश्नः (3) 1.(ब), 2.(स), 3.(ब),4.(स), 5.(ब)। **(4)** 1. (द), 2.(स), 3.(य), 4.(अ), 5.(ब)। **भाषा की बातः (क)** सूर्योदय, सूर्यास्त, चद्रर्मोदय। **(ख)** चाँद-चद्रंमा, चँदा, रात-रात्रि, निशा, आकाश-अंतरिक्ष, अनन्त, माँ-माता, मम्मी, **(ग)** फल-सफल, ज्ञान-अज्ञान, काम-सकाम, असंभव, चल-अचल, सफल-असफल, परिवार-सपरिवार, चर-अचर, **(घ)** दिन-रात, कुशल-अकुशल, चौड़ा-लंबा, बढ़ना-घटना, छोटा बड़ा। **सोचने समझने की बातः** 1.चद्रमा पूर्णिमा में दिखाई देता है। 2. चंद्रमा, अमावस्या को आकाश में दिखाई नही देता। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-5: सिंदबाद की समुद्री यात्रा

1. मौखिक उत्तर: स्वयं करें। **2. लिखित:** सिंदबाद को समुद्री यात्रा का शौक था। 2. नई यात्रा की तैयारी सिंदबाद ने 30 दिन में की। 3. सिंदबाद व उसके सहयात्री एक टापू पर रुके। वहाँ सिंदबाद एक पेड़ के नीचे सो गया। जब सोकर उठा तो न वहाँ जहाज था ना उसके सहयात्री। 4. सफेद गूबंद जैसी वस्तु उकाब का अण्डा था। 5. विशालकायपक्षी हीरे की घाटी में साँप का शिकार करने के लिए गया था। 6. सिंदबाद घाटी के बार उकाब के साथ आया। 7. समुद्र को देखते ही सिंदबाद का मन लहरों की भाँति उमंग से भर उठा। उसे लगा समुद्र उसे बुला रहा है। 8. हीरों की घाटी में मांस के टुकडे फेंकते थे और बड़े-बड़े उकाब उन्हें उठाकर ऊपर घोसंले में ले जाते। उससे उनसे चिपके हीरे लोग एकत्र कर लेते थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न: (3) 1.(स), 2.(स), 3.(स),4.(स), 5.(ब)। **(4).** 1. जहाज में **2.** यात्रा **3.** समुद्र-तट **4.** टापू **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ । **भाषा की बात:** 1. विशाल-बाला का शरीर विशाल हैं, 2. विशालकाय उकाब का अण्ड़ा विशालकाय है। बहुमूल्य हीरा बहुमूल्य है। भूत सवार होना पुनीत पर कक्षा में कार्य करने का भूत सवार है, (ख) नाव-नपुसकलिंग, तट-नपुसकलिंग, घाटी-नपुसकलिंग, हीरा-नपुसकलिंग, पक्षी-नपुसकलिंग, (ग) समुद्र-जल सागर, महासागर; साँप-तकरक्षक, सर्प (घ) संपर्क-सम्पर्क, दृष्टी-दृष्टि, असवस्थ-अस्वस्थ, कहानि-कहानी, निर्णय-निर्ण़य, पखं-पंख, बंदरगाह-बदरगाह, मस्तीष्क-मस्तिष्क, (ड) खरीदा, सुना, गिरा, इकट्ठे, फुफकार,। (च) सुन्दर-पंख, मीठे-फल, गहरी-घाटी, बड़ा-जहाज, बड़ा-पक्षी, जहरीला-सर्प। **सोचने समझने की बात:** 1. हीरों की घाटी में पहुँचकर सिंदबाद को बहुत खुशी का अनुभव हुआ। 2. सिंदबाद की समुद्री यात्रा में हमें जो बातें सबसे अजीब लगी वह है। उकाब एवं उसका अण्डा है। **कुछ करने की बात:** स्वयं करें।

अध्याय-6: संकीर्णता का अंत

1.मौखिक उत्तर: स्वयं करें। **2. लिखित:** शिवभूषण हरिपुर के विद्वान पंडित थे। 2. नगर में पंडित देवदत्त की विद्वता एवं तर्कशास्त्र के कारण प्रतिष्ठा थी। 3. पंडित देवदत्त छुआछूत को मानते थे। यह उनके स्नान करने से पता चलता है। 4. पूजा से लौटते समय पंडित देवदत्त के साथ सड़क के एक गड्डे में गिर गए। 5. पंडित देवदत्त को लच्छू जमादार का ही खून इसलिए चढ़ाना पड़ा क्योंकि किसी और का खून उनके खून से नही मिल रहा था। 6. स्वास्थ्य लाभ करके पंडित देवदत्त के व्यवहार में छूत-अछूत का परिवर्तन आया। 7.पंडित जी को अस्पताल ले जाने वाले लोगों में किस जाति-धर्म के लोग रहे होगें उनसे होने वाली छुआछूत का पंडित जी को कुछ पता न चला। वे तो केवल कराह रहे थे। किसी को भी वे अपने स्पर्श से रोक न पा रहे थे।

बहुविकल्पीय प्रश्नः (3) 1.(स), 2.(स), 3.(ब), 4.(ब), 5.(ब)। **(4).** 1. शिवभूषण **2.** सिर **3.** पुत्रों **4.** स्नान, 5. लच्छू **(5)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗ । **(6)** 1.(द), 2.(य), 3.(अ), 4.(ब) 5. (स)। **भाषा की बातः (क)** पंडित-पंडिताइन, ग्वाला-ग्वालिन, धोबी-धोबिन, लाला-लालाइन। **(ख)** सम्मान-अपमान, शुभ-अशुभ, निकट-दूर, धनी-निर्धन, आवश्क-अनावश्यक, उपयुक्त-अनुपयुक्त। **(ग)** आवश्यक-कार्य, अस्पृश्य-अस्पृश्यता, धार्मिक-अनुष्ठान, संपूर्ण-मानव। **सोचने समझने की बातः 1.** अस्पृश्यता का समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 2. अच्छे विचार वाले लोग समाज का हित कर पाते हैं। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-8: नीति वचन

1. मौखिक उत्तरः स्वयं करें। **2. लिखितः** कबीरदास जी कहते हैं कि संच बोलने वाला जितना कोई पुण्य नही और झूठ बोलने जितना कोई पाप नहीं है। जो सत्य बोलते हैं उनके हृदय में सदैव भगवान व्याप्त रहते हैं। 2. पेड़ कभी फल नहीं खाते है और सरोवर पानी नहीं पीते हैं । इसी प्रकार रहीम दास जी कहते है कि मानव को परोपकार के कार्य करने चाहिए। न कि अपरोपकार से धन एकत्र करना चाहिए। 3. कबीर दास जी कहते हैं कि कल का कार्य आज एवं आज का कार्य अभी करना चाहिए अन्यथा पल-पल-बितते-बितते पूरा समय निकल जाएगा। 4. रहीम दास जी कहते है, कि जिस प्रकार चंदन पर लिपटे सर्प चंदन का कुछ नही बिगाड़ पाते है। उसकी प्रकार उत्तम पुरूष का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(स), 2.(ब), 3.(स) 4.(स), 5.(अ)। **भाषा की बातः** (क) प्रकृति-आचरण, बानी-वाणी, सीतल-ठण्डा, उत्तम-अच्छा। (ख) तरुवर-पेड़, वृक्ष भुजंग-साँप, सर्प, (ग) विषैला, जली, सुखी,दुःखी, पापी, कँटीला। (घ) सत्य-भाववाचक, झूठ-भाववाचक, पाप-भाववाचक,, ठंड-भाववाचक, दिल्ली-जातिवाचक, । (ड) 1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल 3. वर्तमान काल, 4. भविष्यत काल, 5.वर्तमान काल, 6. वर्तमान काल, 7. भूतकाल, 8. वर्तमान काल। (च) सत्य-असत्य, शीतल-अशीतल, धूप-छाँव, उत्तम-अनुत्तम, विष-अमृत, नीरस-खुशी। (छ) 1. वर्षा हुई 2. पत्र पढ़कर सुनाया। 3. किक्रेट खेले, 4. कुत्ते भौंकते रहे, 5. अच्छा परिणाम मिला। (ज) शीतल-जल, ऊँचा-पर्वत, ठण्डा-जल, गहरा-सागर, । **सोचने समझने की बातः** 1. हम अपने दैनिक जीवन में परोपकार को कार्य के रूप में पाते हैं। 2. हाँ, बच्चे भी परोपकार कर सकते है। बड़ों की सहायता करके। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-10: गुरूभक्त एकलव्य

1.मौखिक उत्तर: स्वयं करें। **2. लिखित:** 1. एकलव्य की निराशा को देवर्षि नारद ने दूर करते हुए कहा था कि अभ्यास ही गुरू है। 2. एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की ख्याति सुनी थी। वह उनके सानिध्य में रहते हुए धनुर्विद्या में निपुण होना चाहता था। वह चाहता था कि गुरु द्रोण उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लें। 3. द्रोणाचार्य राजकुमारों को शस्त्रविद्या सिखाते थे। 4. एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य प्रतिमा बनाई और उनके सामने अभ्यास करके धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी, 5. गुरु ने एकलव्य को धनुर्विद्या की शिक्षा देने से इसलिए मना कर दिया था। क्योंकि वह एक भील था और गुरु द्रोणाचार्य केवल राजकुमारों को ही शिक्षा देते थे। **बहुविकल्पीय प्रश्न: (3)** 1. (स), 2.(स), 3.(स)। **(4)** 1. भील, 2. राजकुमार, 3. निपुण, 4.दाएँ। (5) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ । **भाषा की बात: (क)** 1. जातिवाचक, 2. नामवाचक, 3. जातिवाचक, 4. जातिवाचक (ख) जय-अपजय, सुगंध-दुर्गंध, स्पष्ट-अस्पष्ट, शांत-अशांत, निम्न-उच्च, कुशल-अकुशल। (ग) 1. भील-पुत्र, 2. ख्याति, 3. ग्रहण, 4. पहुँचते, 5. दान। **सोचने समझने की बात:** 1. गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को कोई विद्या नही सिखाई थी। फिर भी गुरुदक्षिणा माँग ली इसके पीछे भी यह कारण हो सकता था कि वे जान गए थे कि यह धर्नुविद्या में विशेष निपुण हो गया था। 2. गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य के दाहिने हाथ का अगूँठा ही गुरु दक्षिणा में इसलिए माँगा जिससे वह धनुष न चला सके। **कुछ करने की बात:** 1. एकलव्य एक होनहार एवं मेहनती बालक था। 2. वह अपनी धुन का पक्का था। 3. वह अपने माता-पिता एवं गुरु का विशेष सम्मान करता था। 4. वह गुरु भक्त था। 5. वह अपने गुरु पर सब न्यौछावर करने को तत्पर था।

अध्याय-11: मूर्खों का विलाप

1.मौखिक उत्तर: स्वयं करें। **2. लिखित:** 1. स्वामी रामानंद जी जब रामपुर गाँव में आए थे तब यहाँ के निवासी बड़े व्याकुल थे। कुँओं में पानी सड़ रहा था। खेत खाली पड़े थे, उनमें फसल न उपजती थी। मवेशी दुबले और कमजोर थे। उनसे चला भी न जाता था। गाय-भैसें दूध न देती थी। कोई घर ऐसा न था निसमें बीमारी न हो । 2. जब उन्होने गाँव का यह हाल देखा तो उन्हें बड़ी पीड़ा हुई। उन्होने एक बरगद के नीचे समाधि लगाई। उनके तप का प्रभाव हुआ कि गाँवसे कोप दूर होने लगा। धीरे-धीरे लोग मवेशी स्वस्थ होने लगे। गाँव के कुओं का जल मधुर होने लगा। खेतों में उपज होने लगी। सब ओर खुशहाली ने लौटना शुरू किया। जब स्वामी जी को लगा उनका कार्य पूर्ण हो चुका है, तो वे गाँव छोड़कर जाने का विचार करने लगे। 3. गुरुकुल में उनके अनेक शिष्य थे, जो ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते और वहीं रहकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करते थे। 4. स्वामी जी के सात शिष्य निरे

मूर्ख के थे। 5. सभी शिष्य नदी पर इसलिए विलाप करने लगे थे क्योंकि वे अपने एक साथी को नदी में डूबा हुआ समझ रहे थे।। 6. उस व्यक्ति ने उन सभी के सिर पर हाथ रख-कर गिनती कहलवाई-''एक, दो, तीन, चार पाँच, छह, सात।''। संख्या पूरी होने पर सातों खुशी से नाचने लगे। पुनः उसने सातों को एक पंक्ति में खड़ा किया और एक-एक के सिर पर हाथ रखकर बोलकर गिनती की। स्वयं को संख्या में पूरे पाकर उन्होने उस व्यक्ति को धन्यवाद दिया और अपनी-अपनी जेब में से , जो कुछ भी उनके पास था। निकालकर उसे दे दिया। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(स), 2. (स), 3.(स), 4.(स)। **(4)** 1. तप, 2. मधुर, 3. निरे, 4.देखने। (5) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓। (घ)1.(द), 2. (य) 3.(अ), 4. (ब), 5. (स)। **भाषा की बात : (क)** 1. (ब), 2. (स) 3.(स) 4. (ब), 5.(अ)। **(ख)** सेवक-मालिक, मूर्ख-बुद्धिमान, देशी-विदेशी, गुण-अवगुण, परिचित-अपरिचित, ईमानदारी-बेईमानी। **(ग)** शिष्य-पुल्लिंग, स्वामी-पुल्लिंग, शिष्या-स्त्रीलिंग, विद्या-नपुंसकलिंग, कुटिया-नपुंसकलिंग, बरगद-नपुंसकलिंग, नदी-नपुंसकलिंग। **(घ)** 1. कर्त्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. करण, 5. कर्ता। **(ङ)** 1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल, 3. भविष्यकाल। **सोचने समझने की बातः** स्वयं करें। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-12: सरकस

1. मौखिकः स्वयं करें। **2. लिखितः**1. कवि भय एवं विस्मय से पूर्ण विचार के वशीभूत हो सरकस देखने गया। 2. बंदर ने सरकस में घोड़े की सवारी की एवं कुर्सी पर बैठकर बीड़ी करबत दिखाए। 3. सिंह स्यार बना हुआ है। भाव यह है कि मानव जो शेर जैसे शक्तिशाली एवं खतरनाक पशु को भी अपने बना में स्यार के समान डटा हुआ है। 4. सिंह अपने को भी भूल गया है इस कथन का भाव यह है कि सिंह (शेर) अपने स्वभाव को ही भूल चुका है। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(ब), 2.(स), 3. (स), 4.(अ) 5.(ब)। **(4)** 1. देखे बहु व्यायाम अनोखे। उसने सरपट लैंप जलाया। 2. चढ़ बंदर ने उसको फेरा। टट्टू ने भी किया सपारा। 3. पकड़े हुए सिंह को लाया। मनुज सिंह को देख लड़ाई। 4. किंतु स्यार बना हुआ है। यह पिंजड़े में बंद रहा है। (5) 1.(द), 2.(य), 3.(अ), 4.(ब), 5.(स)। **भाषा की बात : (क)** 1. बंदर-बछेरा, हनुमान, सुंदर, 2. तोता-शूक पक्षी, 3.शेर-सिंह, नाहर। (ख) स्वच्छंद-स्वतंत्र, बछेरा-घोड़े का बच्चा, मनुज-मनुष्य, विस्मय-आश्चर्य, नाहर-शेर, नर-व्यक्ति। (ग) शेर-शेरनी, बंदर-बंदरिया, घोड़ा-घोड़ी, रीछ-रीछनी। (घ) 1. प्यासा शेर, 2. प्यारा बच्चा, 3. मोटा-वृक्ष, 4. ऊँचा-पर्वत, 5. लम्बी-सड़कें, 6. हरा कोट। **सोचने समझने की बातः 1.** पशुओं द्वारा तमाशा दिखाना उनकी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। 2. पशुओं को तमाशा दिखाने में प्रयोग किया जाना उन पर अत्याचार करना है। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-14: बुजुर्ग की सीख

1. मौखिक उत्तर:स्वयं करें। **2. लिखित:** 1. सेठ जी को तोता मार्ग में पक्षी बेचने वाले से मिला था। 2. तोते के प्रति घर के सदस्यों ने अच्छा व्यवहार किया व उसे खाने हेतु हरी मिर्च, अमरुद दिया है। 3. पिंजरे से निकलकर तोता इसलिए आंनदित था कि वह आजाद हो गया। इस आनंद को वह जंगल यहाँ-वहाँ उड़ता हुआ प्रकट कर रहा था। 4. मेरी बात को गाँठ बाँध लेना । वन में लाल-लाल बड़े लुभावने फल मिलेंगे। ऐसे फल तुमने कभी न खाए होगें। तुम केवल उन फलों को ही खाना जिनकी प्रकृति तुम जानते हो। अपरिचित लाल फलों को न खाना। वे बहुत आकर्षित करने वाले फल हैं। इस वन में जो लाल फल जितना चमकीला और आकर्षित करने वाला हैं। वह उतना ही जहरीला है। यदि तुम ऐसे फल खाओगे तो मृत्यु निश्चित है यह स्मरण रखना। 5. तोते ने सोचा कि काला रंग होने पर हो सकता है ये जहरीले हों। उसने उन्हें न खाया। आगे उड़ने पर उसे लाल-लाल चमकते हुए बेर दिखाई दिए। वे पके हुए जान पड़ते थे। वह उल्लू की सीख भूला नहीं था कि लाल-लाल चमकने वाले फल विषैले होंगे। परंतु ये फल ही उसे लुभा रहे थे। उन्हें देखकर उसकी भूख भी बढ़ गई थी। वह सोचने लगा, मूर्ख उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता। उसे क्या मालूम कि रंग क्या होता है। उल्लू मांसाहारी जीव है उसे फल के स्वाद का क्या पता। उसे क्या मालूम कौन-से रंग का फल विषैला है, और कौन-सा नहीं है। उल्लू की सीख उसे पूर्णतया भ्रामक लगी। 6. खाना शुरू ही किया कि चकराकर पेड़ से नीचे गिर पड़ा। उसे उल्लू के शब्द याद आने लगे। लाल-लाल चमकते फल वास्तव में विषैले थे। काले फल जिन्हे उसने नही खाया वे स्वादिष्ट थे, परंतु लुभावने न थे। बुर्जुग उल्लू की सलाह न मानने पर तोते ने जहरीले फल खाए और प्राणों से हाथ धो बैठा। 7. हमें बडें की दी हुई सीख को नजरअंदाज नही करना चाहिए तथा उनकी बातें माननी चाहिए। **बहुविकल्पीय प्रश्न: (3)** 1.(ब), 2.(स), 3.(ब), 4.(स) **(4)** 1. पक्षी, 2. पिंजरे, 3. उड़ता, 4. उल्लू, 5. वन में। (5) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ । **भाषा की बात: (क)** तोता-तोती, उल्लू-मादा उल्लू, बाज-मादा बाज, मगरमच्छ-मगरमच्छी, (ख) तितली-नर तितली, मछली-नर,मछली, मक्खी-नर मक्खी, चिड़िया-चिड़ा (या नर चिड़िया), मकड़ी-नर मकड़ी, चींटी-चींटा। (ग) 1. मूर्ख-मूर्ख बंदर, चालाक-चालाक लोमड़ी, प्यासा-प्यासा कौआ, दयालु साधू। **सोचने समझने की बात:** स्वयं करें। **कुछ करने की बात:** स्वयं करें।

अध्याय-15: वृक्षों का महत्व

1. मौखिक उत्तर:स्वयं करें। **2. लिखित:** 1. शाकाहारी प्राणी-घास, पत्ते व फल फूल आदि खाने वाले प्राणी शाकाहारी है। मांसाहारी प्राणी मांस खाने वाले मांसाहारी कहलाते है। 2. पेड़-पौधे प्राणियों को मौसम की मार से बचाकर आश्रय देते हैं। वे पक्षियों के घोसलें को स्थान देते है। और अपने पत्तों द्वारा छाया देकर वे प्राणियों की रक्षा करते हैं। मानव जगज वृक्षों की छाया में जो सुख अनुभव करता है। वह सर्वविदित है। जो लोग आश्रयस्थलों से बाहर रहते है। वे ही इनकी छाया के महत्व को समझ सकते हैं। वृक्ष वायुमंडल को ठंडा रखते है। इससे वर्षा होने में सहायता मिलती है। जहाँ वृक्ष अधिक होते है। वहाँ वर्षा भी उचित मात्रा में होती है। इससे कृषि-कार्य करने तथा वायुमंडल को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है। 3. यदि शाकाहारी प्राणी वनस्पति जगत को भोजन के रूप में प्राप्त न करेंगे तो मांसाहारी प्राणी किस प्रकार उन्हें भोजन के रूप में प्राप्त करेंगे। इस प्रकार प्राणियों के शरीर का भरण-पोषण मूलत: वृक्षों अथव वनस्पति जगत से ही माना जाता है। 4. जहाँ पेड़ पौधे नही होते, वह स्थान मरूस्थल में बदल जाता है। कारण यह है कि एक ओर तो वृक्ष बादलों को वर्षा हेतु आकर्षित करते है। तथा दूसरी और ये वर्षा से मिट्टी के कटाव को रोकते है। पेड़-पौधों की कमी से भूक्षरण होता है इससे वृक्षविहीन भूमि का तापमान बढ़ता है। भूमि में नमी की मही हो जाती है। और मिट्टी के कण एक दुसरे का साथ छोड़ बिखर जाते हैं। यही मरूस्थल बनने की प्रक्रिया होती है। 5. वनस्पति जगत हमें मधुर फल, औषधियाँ, इमारती लकड़ी व ईधन प्रदान करता है। कंद और मूल भी हमें इनसे प्राप्त होते हैं। रबड़, गोंद और चाय भी हमें पेड़-पौधों से प्राप्त होती है। अनेक प्रकार के रंग इत्र और कपड़ो के रेशों के स्त्रोत भीवनस्पतियाँ ही है। मधुमक्खियाँ वनस्पतियों के फूलों से रस लेकर ही शहद का निर्माण करती हैं। जिसे एक महान औषधि के रूप में माना जाता है। 6. वृक्ष वायुमंडल को शुद्ध बनाए रखते है। ये दूषित वायु को ग्रहण कर उसे अपना आहार बना लेते है। और सूर्य के प्रकाश में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। यह ऑक्सीजन मानवों, पशुओं और पक्षियों सभी को जीवन देती हैं। इसीलिए वनों और उपवनों में प्रात:भ्रमण को स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी माना गया हैं। पेड़-पौधों की हरियाली आँखों की ज्योति बढ़ाने औश्र मन को प्रसन्न रखने में भी सहायक होती है। 7. वर्तमान समय में कागज तथा अन्य घरेलु व व्यापारिक समान बनाने के लिए पेड़-पौधों को बुरी तरह से काटा जा रहा है। जंगल खाली हो गए हैं वे जंगली जानवरों के लिए भोजन व आश्रय की समस्या उत्पन्न हो गई है। जंगल कटने से वायुमंडल दूषित और तप्त हो गया है। बाढ़ अधिक आ रही है तथा वर्षा कम हो गई है समय पर भी नही होती। **बहुविकल्पीय प्रश्न: (3)** 1.(स), 2.(अ), 3.(अ), 4.(ब), 5. (ब) **(4)** 1. उचित 2. आकर्षित, 3. वनस्पति, 4. दूषित, 5. हरियालीं। (5) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ । **भाषा की बात: (क)** प्रसन्नता, धनी, मानवता, बेचैनी,

मनुष्यता, क्रोधी, स्वतंत्रता, जंगली, परतंत्रता, साथी, व्याकुलता, मजबूती। **सोचने-समझने की बातः** 1. पीपल का वृक्ष है, जो निरंतर ऑक्सीजन छोड़ता है, जबकि अन्य वृक्ष केवल दिन के समय ऑक्सीजन छोड़ते है। 2. आम, केला, नारियल, बरगद एवं पीपल आदि वृक्ष है जिनका भारतवर्ष में धार्मिक महत्व है और उनकी पूजा होती है अथवा वे किसी-न किसी रूप में पूजा में काम में लाए जाते है। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय-17: फूल और काँटा

1. **मौखिकः** स्वयं करें। 2. **लिखितः** 1. फूल और काँटे में दोनों एक ही पौधे के है।। 2. फूल और काँटे में पाई जाने वाली असमानताएँ फूल सभी को खुशबू एवं प्यार देता है जबकि काँटा सबकों कष्ट देता है। 3. फूल और काँटों के प्रति तितलियों और भौरों का व्यवहार फल के प्रति अच्छा एवं काँटों के प्रति बुरा व्यवहार है। 4. कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि कुल में पैदा हुए लोगों का आचरण भी अलग-अलग होता है। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(ब), 2.(ब), 3.(स), 4.(स), **(4)** 1. एक ही पौधा उन्हें हे पालता। एक ही सी उन पर चाँदनी डालता। 2. फाड़ देता है किसी कावरवसन। और का है बेध देता श्याम तन। 2. दूसरा है सोहता सुर शीश पर, जो किसी में हो बड़प्पन की कसर। (ग) 1. (द), 2.(य), 3. (अ), 4. (ब), 5.(स)। **भाषा की बातः (क)** भौंरा-भौंर भँवरा 2. फूल-पुष्प सुमन। 3. रात-रात्रि निशा। 4. चाँद-चंद्रमा, चँदा। 5. मेघ-बादल मेघा। (ख) प्रचार, प्रताप, उप-उपवन, उपचार। अन-अनादर, अनन्त, अवगुण-अवरोध, आ-आकृष्ण, आकृति। (ग) सफल-सफल पुरुष, स्वस्थ-स्वस्थ हाथी, निराशा-निराश व्यक्ति, सरल-सरल स्वभाव, मारना-हाथी मारना (घ) मेघ-नपुंसकलिंग, पौधा-नपुसकलिंग, फूल-नपुसकलिंग, पत्ता-पुल्लिंग, कली-स्त्रीलिंग, (ङ) आवश्यकता-अधिक आवश्यकता, दुखी-दुखी मनुष्य, ताजगी-खूब ताजगी, सुखी-सुखी नारी, प्रसन्नता-अति प्रसन्नता, कायरता-कायरता वाला कार्य। **सोचने समझने की बातः1.** (i) फूलों का सुंदर एवं कोमल स्वभाव माना जाता है। (ii) काँटा का कठोर स्वभाव माना जाता है। (iii)दोनों में फूल लोगों को भाता है। 2. हम दोनों में से फूल के स्वभाव का अनुकरण करना चाहेंगे, क्योंकि फूल लोंगों को खुशी देता है। **कुछ करने की बात** : स्वयं करें।

अध्याय-18: अकबर बीरबल की बातें

1. मौखिक-स्वयं करें। **2. लिखितः** 1. बीरबल आगरा के बाहर किसी गाँव में राजा अकबर के कहने पर जा बसे। 2. राजा टोडरमल ने सन्यासी से यह प्रश्न किया कि व सन्यासी ने उनके प्रश्न का उसके भीतर बनने वाले पवित्र-विचार का उत्तर दिया। 3. राजा मानसिंह ने सन्यासी से यह प्रश्न किया कि हवा से भी अधिक तीव्रगति से कौन

चलता है। व सन्यासी ने उनके प्रश्न का उत्तर व्यक्ति के विचार से दिया। 4. तानसेन ने संन्यासी से यह प्रश्न किया कि रात्रि के समय सबसे मधुरस्वर क्या है। व संन्यासी ने उनके प्रश्न का चतुराई से उत्तर वह स्वर जो ईश्वर की प्रार्थना में लगा होता है दिया। 5. सम्राट ने संन्यासी से यह प्रश्न किया और संन्यासी ने उनके प्रश्न का उत्तर चतुराई से दिया। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(ब), 2.(स), 3.(अ), 4.(ब), 5.(स)**(4)** 1. आगरा, 2. शिष्य, 3. जयपुर, 4. अतिथि, 5. बीरबल। (5) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ ।

भाषा की बातः (क)1. (ब), 2.(स), 3.(अ) 4.(ब)। (ख) क्रम–सभी लोगों के बीरबल से क्रम से प्रश्न पूछे। कर्म–प्रत्येक व्यक्ति का कर्म है कि वह अच्छा कार्य करें। ओर–ओम अपने ताऊ जी के घर की ओर गया है। और–मयूर और प्रतीक दोनों सगे भाई हैं। चर्म–मृत पशुओं के चर्म से जूते, चप्पल, एवं बेल्ट आदि बनाएँ जाते हैं। चरम–आज अधर्म अपनी चरम सीमा पर है। (ग) अनंत–आकाश, बड़–मैदान, अच्छे–लोग, लाल–कमीज, ऊँचे–पेड़, विषैला–नाग, सुंदर–गुलाब, हरे–पत्ते, नरदार–बालक लाल–फूल, मीठे–फल, बड़ा–आदमी। (घ) महान–महान व्यक्तित्व, आवश्यक–आवश्यक कार्य, लंबा–लंबा बाँस, ऊँचा–ऊँचा पेड़। **सोचने समझने की बातः1** बीरबल अकबर के अतिप्रिय इसलिए थे, क्योंकि वे हाजिर जवाब थे। 2. सम्राट अकबर के दरबार में नौरत्न थे। यहाँ नौरत्नों से अभिप्राय है कि उनके दरबार में नौ लोग एक साथ बैठकर गुणगान व्याक्त थे। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय–20: अलीबाबा और चालीस चोर

1. मौखिक–स्वयं करें। 2. **लिखितः 1.** अलीबाबा अपनी आजीविका के लिए लकड़ी काटकर बेचता था। 2. गुफा का दरवाजा खुल जा सिमसिम कहने से खुलता था। 3. थोड़ी देर बाद अलीबाबा पेड़ से नीचे उतरा और गुफा के दरवाज़े के बाहर जाकर बोला,''खुल जा सिमसिम।'' वह यह देखकर हैरान रह गया कि उसके कहते ही दरवाजा खुल गया। वह गुफा में प्रवेश कर गया, तो दरवाजा अपने आप ही बंद हो गया। 4. अलीबाबा ने समीप ही अपने गधे को खोजा और उस पर थैले लादकर उनके ऊपर काटी गई लकड़ियाँ ला दीं और गधे को हाँककर चल दिया। उसकी पत्नी बेचैनी से उसकी दी और उससे कहा कि वह बड़े भाई कासिम के यहाँ से तराजू ले आए। वह उस सारे सोने–चाँदी को तौलना चाहता था। 5. अलीबाबा की पत्नी तराजू लने अलीबाबा के भाई कासिम के यहाँ गई। कासिम की पत्नी बड़ी चालाक थी। उसने यह पता लगाने के लिए कि ये लोग क्या तौलेंगे, तराजू के एक पलड़ें के नीचे एक चिपचिपा पदार्थ लगा दिया। अलीबाबा की पत्नी तराजू लेकर वापस आ गई। अलीबाबा ने ढिबरी के धुधँले प्रकाश में अशर्फियाँ तौलीं। काम पूरा करने के बाद उसकी पत्नी तराजू वापस दे आई। कासिम की पत्नी ने पलड़ा पलटकर देखा, तो उस

पर अशर्फी चिपकी हुई थी। उसने कासिम को सब बताया कि उसके भाई ने आज तराजू से अशर्फियाँ तौली है। उन्हें इतनी अशर्फियाँ कहाँ से मिलीं, यह पता लगाना चाहिए। 6. कासिम गुफा में प्रवेश तो कर सका परंतु बाहर न आ सका। क्योंकि वह खुल जा सिमसिम कहना भूल गया। 7. मरजीना समझ गई कि अवश्य ही दाल में कुछ काला है। उसने अन्य मटकों को भी जाँचा। जिन मटकों में तेल भरा था, उसने उनका पता किया । उसने उनका सारा तेल गर्म करके उन मटकों में उड़ेल दिया जिनमें चोर छिपे बैठे थे। इस प्रकार सभी चोरों को अंत हो गया। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1. (स), 2.(स), 3.(स), 4.(स), 5.(स)**(4)** 1. चालाक, 2. टहनियों, 3. चोरों, 4. लालच, 5. काला। **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ । **भाषा की बातः** (क) 1. (स), 2.(अ), 3.(अ)। (ख) दाल में काला होना–मरजीना समझ गई कि दाल में कुछ काला है। आँखें फटी–की–फटी रह जाना– इतने सोना–चाँदी देखकर कासिम की आँखें फटी–की फटी रह गयी। (ग) 1. चोर पकड़े गए। 2. बच्चे आकर बैठ गए। 3. साधुओं ने भोजन कर दिया। (घ)1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत् काल। **सोचने समझने की बातः 1.** चोरों ने चोरी करके गुफा में बहुमूल्य खजाना लाकर रखा। अलीबाबा ने चोरों का खजाना चुरा लिया। अलीबाबा का यह कार्य उसके उचित चरित्र को उजागर करता है। 2. हाँ खुल जा सिमसिम कहने भर से गुफा का दरवाजा खुल सकता था। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

अध्याय–21: दो वरदान

1. मौखिक–स्वयं करें। 2. **लिखितः1.** राम दशरथ के अतिप्रिय थे। वे सभी पुत्रों में सबसे बड़े थे। राज्य के उत्तराधिकारी भी वही थे। राज्य के उत्तराधिकारी भी वही थे। अयोध्या की प्रजा उन्हें युवराज के रूप में देखना चाहती थी। राजा दशरथ शीघ्रातिशीघ्र उन्हें उत्तराधिकारी घोषित करना चाहते थे। उन्होने अपने मंत्रियों और दरबारियों से भी मंत्रणा कर ली थी। 2. राम के राज्यभिषेक की घोषणा के अवसर पर भरत ननिहाल गए हुए थे। 3. मंथरा कहती गई, राजा दशरथ ने राम के राज्यभिषेक का यह सुनियोजित अवसर चुना है क्योकि भरत ननिहाल गए हैं और जब तक भरत लौटेंगें, बहुत देर हो चुकी होगी। तब कोई भी कुछ न कर सकेगा। राम का राज्यभिषेक हो चुका होगा। रानी, राम के प्रति आपका अंधा प्रेम भरत के अधिकार को छीन रहा है। यदि आप चाहती हैं कि आपका पुत्र जीवित रहे, तो कुछ कीजिए। यही उचित समय हैं। कुछ कीजिए रानी। 4. जब राजा दशरथ राम के राज्यभिषेक का समाचार देने रानी कैकेयी के महल मे गए तो रानी की दशा देखकर स्तब्ध रह गए। कैकेयी राजा दशरथ की प्रिय रानी थी।राजा ने कैकेयी से उनके विलाप का कारण पूछा और कहा कि वे वचन देते हैं। कि रानी की इच्छा अवश्य पूरी करेंगें। 5. पहली इच्छा राम को तुरंत

चौदह वर्ष का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक। **बहुविकल्पीय प्रश्नः (3)** 1.(स), 2.(स), 3.(स), 4.(ब), 5.(ब)**(4)** 1. अतिप्रिय, 2. मंथरा, 3. दों, 4. असहनीय, 5. पीड़ा। **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ । **भाषा की बात : (क)** राम–व्यक्तिवाचक, प्रजा–समूहवाचक, अयोध्या–स्थानवाचक, दशरथ–व्याक्तिवाचक, मूर्खता–व्यक्तिवाचक, प्रजा–समूहवाचक, अयोध्या–स्थानवाचक, दशरथ–व्यक्तिवाचक, मूर्खता–गुणवाचक, समाचार–गुणवाचक, दासता–गुणवाचक, पुत्र–व्यक्तिवाचक। (ख) कुबड़ी दासी: विशेषण–कुबड़ी विशेष्य–दासी। पराक्रमी राम: पराक्रमी–विशेषण, राम–विशेष्य। प्रिय पुत्र: प्रिय–विशेषण, पुत्र–विशेष्य। न्यायी राजा: न्यायी–विशेषण, राजा–विशेष्य। (ग) पुरुषोत्तम, मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीराम। (घ) प्रसन्न–प्रसन्न जनता, मूर्ख–मूर्ख व्यक्ति, उदार–उदार नीति, प्रतापी–प्रतापी राजा । (ड़) पहली इच्छा राम को तुरंत चौदह वर्ष का वनवास और दूसरा भरत का राज्यभिषेक। **सोचने समझने की बातः 1.** दशरथ की रानियाँ कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकयी थी। राम की माता का नाम कौशल्या था। 2. राम के अन्य भाइयों के नाम लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघन थे। 3. वनवास हेतु राम के साथ अन्य सीता माता एवं लक्ष्मण जीवन के साथ गए। **कुछ करने की बातः** स्वयं करें।

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com